इन्डियन यास्मिन

हमारा होफ मेरे लिए किसी दृश्यपटल या चित्रावली से कम न था। शायद ही ऐसा कोई दिन रहा होगा, जब मै अपने रसोईघर की खिड़की से इसका सौन्दर्य न निहारा होऊँ। अप्रील महीने का आरम्भ हुआ नही कि इसका लॉन हरा भरा हो जाता था। वर्च, ओक, आहोर्न और क्रस्तानियन के पेंड़ हरी पत्तियों से लद जाते थे। नारसिसन, माई ग्लोक्सन, क्रोकूस और टयूलिप्स के पौधे निकल आते थे। मई महीने मे ये रंग विरंगे फूलों से लद जाते थे।

मेरी रसोई घर की खिड़की से लगभग तीस मीटर की दूरी पर एक तीन मंजिला मकान था, जिसमे आठ अपार्टमेन्टस थे। मेरे अपार्टमेन्ट की चार खिड़कियाँ इन अपार्टमेन्टों की वालकोनियों की तरफ खुलती थीं। इन अपार्टमेन्टों मे रहने वाले परिवारों मे किसी से भी मेरा प्रत्यक्ष परिचय नही था, गोकि इस मकान मे आये मुझे तीन वर्ष से ऊपर हो चले थे। ।

काम पर जाने के लिए मेरे मकान के सामने से दो रास्ते फूटते थे, जिनमे से एक सामने वाले मकान के आगे से हो कर जाता था। कोने पर बच्चों के खेलने के लिए एक स्पील प्लात्स था, जिसे घेरे आठ दस बैंचें लगी हुई थीं। थोड़ी सी धूप निकली नही कि ये स्पील प्लात्स छोटे छोटे बच्चों से भर जाता था और बैंचे उनकी मॉओं से।

मुझे सबसे ज्यादे इस होफ का इन्डियन यास्मिन अभिभूत कर रखा था, जो सामने निचली मंजिल के बॉये अपार्टमेन्ट के वालकोनी से लगे एक गोल घेरे मे खड़ा था। एक्समस पौधे की तरह इसमे ठंढ की मार सहने का सामर्थ्य तो न था, फिर भी वो इससे लड़ता झगड़ता अक्टूबर के अन्त तक गुलावी रंग के फूलों से लदा अपना सौन्दर्य विखेरता रहता था। नवम्बर की ठंढ इससे नही झेली जाती थी। इसके घेरे को साफ कर दिया जाता था।

मार्च मे दूसरे पौधे जमीन के वाहर झॉकने से कतराते थे, पर ये घेरा फिर से छोटे छोटे पौधों से भर जाता था। होफ मे अभीं भी वर्फ विखरी पड़ी रहती थी। ये जीवट पौधे मई तक बढ बढ कर आदम कद के हो जाते थे। जून शुरू हुआ नही कि ये गुलावी फूलों से लद जाते थे जो महज सुन्दर ही न थे। इनमे एक मादक खूशबू भी थी। फूलदानो से इन्हे नफरत थी। पलकों मे ही ये मुरझा जाते थे। होफ के दूसरे पौधों पर एक सरसरी नज़र डालने के बाद मेरी ऑखे इस पौधे पर जैसे ॲटक सी जाती थीं और मै मंत्रमुग्ध इसकी सुन्दरता घंटों निहारा करता था।

एक दिन शाम के यही कोई सात बज रहे होंगे कि अचानक मेरी नजर सामने वाले मकान की पहली मंजिल के बॉये अपार्टमेन्ट मे रहने वाली लड़की पर पड़ी। वो अपने अपार्टमेन्ट की खिड़कियों के पर्दे खीच रही थी। एक पल को वो भी ठिठक कर रह गई। पर्दे खींचे जा चुके थे, पर वो अभी भी एक खिड़की के पीछे खड़ी थी। मै वापस अपने ड्राईन्गरूम मे चला आया, पर उसका ढीला ढाला सफेद नाईट गाऊन और उसके नितंव तक फैले सुनहरे वाल मुझे ठीक ठाक झकझोरे हुए थे। मै घन्टो बैठा वस यही सोचता रहा कि आखिर वो स्पील प्लात्स को घेरे बैचों पर बैठी तमाम औरतों मे से कौन होगी!

बड़ी अधीरता से मै दूसरे दिन की शाम का इन्तजार करता रहा।

पहली बार मै स्पील प्लात्स के समीप बैठी औरतों पर ठीक से अपनी नजर डाली। एक कोने की बैंच पर अकेली बैठी यही कोई बाईस तेईस वर्ष की लड़की किसी किताव़ मे खोई हुई थी। इस स्पील प्लात्स के बाद ही मेरा रास्ता एक ऊँचाई ले लेता था। इस वजह से मुझे अपने सायकल की रफ्तार थोड़ी तेज कर देनी पड़ती थी, पर पता नही क्यों पर मेरा मन कह रहा था कि ये किताव पढती लड़की ही सामने वाले अपार्टमेन्ट मे रहती है।

ठीक सात बजे ये लड़की अपने पर्दे खीचने आती थी, जिसका मै बड़ी व्यग्रता से इन्तजार करता रहता था। मुझे देख कर वो ठिठक सी जाती थी, पर मै अपनी खिड़की पर ही डटा रहता था। पर्दो के खींच जाने के बाद भी बत्तियों के जलते रहने की वजह से वो अपने अपार्टमेन्ट मे एक आकृति की शक्ल मे हिलती डूलती नज़र आती रहती थी। रह रह कर उसकी नज़र भी मेरे रसोई की खिड़की की तरफ उठ जाती थी।

समय के साथ ये सात बजे का समय मेरे लिए इतना मूल्यवान हो चला था कि मै वता नही सकता। अब अपने पर्दे खींचने से पहले अनायास उसकी नज़र मेरी खिड़की की तरफ उठ जाती थी। इतनी दूरी से उसके चेहरे का भाव नही पढा जा सकता था, पर अपने आखिरी पर्दे खींचने से पहले वो कुछ लम्बा ही अपनी खिड़की पर ठहरने लगी थी।

मै काम से अमूमन पॉच बजे वापस लौटता था। दूसरी औरतें या तो एक दूसरे से गप्पे मारती होती थीं या फिर अपने बच्चों से उलझी होती थी। सिर्फ एक अपनी किताब मे खोई होती थी। एक वार हलो कहके मैने उसका ध्यान तोड़ना चाहा, पर सफल न हुआ। वो अपनी किताब मे ही खोई रही।

मैने भी नियमित उसे अपने हलो कहने का क्रम नही तोड़ा। पता नही कब उसे इस वात का पता चला कि मेरा कहा हलो सिर्फ उसके लिए है।

मुझे आज तक उसका अपनी नजरे उठाना और हल्के से हलो कहना चित्रवत याद है। इस तरह की सुन्दर ऑखें मैने पहले भी कईयों के पास देखी थीं, पर उनमे एक अतल गहराई लिए जो उदासी बसी थी, वो मेरे लिए नई थी। यही मुझे सबसे ज्यादे अभिभूत भी की थी।

गेरानियनस्ट्रासे से दूसरे दिन ज्योंही मैने अपनी सायकल होफ की तरफ मोड़ी, ये लड़की अपनी किताब बन्द कर चुकी थी। मुझसे पहले उसी ने मुझे हलो कहा। इस दिन शाम को अपने पर्दे खींचने से पहले उसना अपना दॉया हॉथ भी लहराया। अब मेरा बचा खुचा संशय भी जाता रहा कि ये अकेली किताबों मे खोई लड़की ही सामने वाले अपार्टमेन्ट मे रहती है।

धीरे धीरे ये इन्डियन यास्मिन मेरे लिए बेमानी होता जा रहा था और इस अपार्टमेन्ट की एक एक हरकत के पीछे मेरा मन और ध्यान ॲटका रहता था। कहने को तो ये सम्बन्ध सिर्फ हलो तक ही सीमित था, पर मै अपनी कल्पनाओं मे कुछ ज्यादे ही दूर जा चुका था। ढंग से मैने उसे एक बार भी नही देखा था, पर उसकी सुन्दरता पर मुझे रत्ती भर भी संदेह नही था।

ऐसे ही न जाने कब नवम्बर आया, मुझे पता तक न चला। होफ का जीवन लगभग सो चुका था। यहाँ की हरियाली मिट चुकी थी। एक्समस के पौधों के अलावे बाकी सब नंगे हो चले थे। यास्मिन का गोला घेरा भी वर्फ से आच्छादित हो चला था। सामने वाले अपार्टमेन्ट की जालोजियॉ नीचे तक गिराई जा चुकी थीं। होफ मे सिर्फ वर्फ ही वर्फ विछ गई थी। एक अजीव सा सन्नाटा वहॉ छा चुका था।

इसी नवम्बर मे किसी एक शनिवार को ठंढ के बावजूद अप्रत्याशित वर्लिन के कोहरे को सूर्य की रोशनियों ने तोड़ा। मै खरीददारी करके वापस

लौट रहा था कि अचानक ये लड़की मुझे होफ के एक बैंच पर बैठी दिखी।एक दुपट्टे से उसने अपना सर और लगभग आधा चेहरा ढॅक रखा था।हमेशा की तरह वो इस दिन भी किसी एक किताव मे खोई हुई थी।सामने के स्पील प्लात्स मे एक छोटा सा वच्चा अकेला खेल रहा था।
एक खाली वैंच से अपनी सायकल टिका कर मैने अपने ग्लव्स खोले और विना किसी हिचक के आगे वढा।मुझे अपनी ओर आते देख कर उसने अपनी एक उँगली पढने वाले पन्ने मे टिका कर किताव वन्द की और अपनी नज़रें उठाई।जव मैने अपना परिचय देकर अपना दॉया हॉथ वढाया तो वो हड़वड़ा कर उठी और अपने ग्लव्स खोलने लगीःस्टेफानी लिंड कहके उसने अपना हॉथ वढाया.फिर इशारे से स्पील प्लात्स मे खेलने वाले वच्चे की ओर देखाःअना
ःतुम्हारी वेटी है!
ःहॉ।
ःइसके पापा भी तुम दोनो के साथ ही रहते हैं!
ःनही।उनसे मेरा अलगाव हो चुका है।
ःइस अपार्टमेंट मे तुम कव आई!
ःडेढ साल हो गए।
ःइसके पहले कहॉ रहती थीं!
ःलिख्टनराडे मे।
ःकितने कमरे हैं तुम्हारे अपार्टमेंट मे!
ःढाई कमरे हैं.पर हम दो जनो के लिए तंग नही है।
ऐसे ही औपचारिक सवाल मैं करता रहा जिसके वो संक्षिप्त जवाव देती रही।उसने अपना हॉथ अभी भी वापस नही खींचा था।
जव मैने उसे वताया कि मै उसके मकान के ठीक पीछे रहता हूॅ तो वो हल्के से मुस्कराईःमै जानती हूॅ।
ये मेरा स्टेफानी से पहला परिचय था।उसकी उम्र के वारे मे मेरा अनुमान गलत नही था।वो वाकई तेईस वर्ष की थी और अपने तेईसवें वर्ष मे उसके पास एक तीन वर्षीय वैवाहिक इतिहास भी था।ये मेरे लिए वहुत दुखद था.फिर भी मै अपने आप पर चकित था।वर्लिन मे पहली वार मुझे किसी के इतिहास मे कोई रूचि नही थी।स्टेफानी मुझे हर कोणों से अनछूई लग रही थी।
इसके वाद उससे मेरी छिटपूट मुलाकातें हुई.ज्यादेतर काईसर्स नाम के एक जेनरल स्टोर मे।उसके खरीददारी के सारे थैले मै अपनी सायकल की हैन्डल पर लटका लिया करता था.फिर घर हम साथ ही लौटते थे।हर वार वो मुझसे अपने अपार्टमेन्ट मे आने का आग्रह करती थी.जिसे मै टाल दिया करता था।इसकी एक वजह थी।जर्मनी मे अलगाव भी कुछ अजीव ही तरह का होता है।पति पत्नी एक दूसरे से अलग तो हो जाते हैं.पर एक दूसरे के लिए नितान्त अनजान नही हो पाते।एक दूसरे की यादों से जकड़े होते हैं।परस्पर मिलना जुलना चलता रहता है।
स्टेफानी का अपने पति से अलगाव का क्या प्रारूप था.ये मै नही जानता था और न जानना चाहता था।उसके अपार्टमेन्ट मे उसके पति की यादें किन किन कोनो मे अलगाव के वावजूद कहॉ कहॉ वसी थी.ये मै देखना नही चाहता था।अक्सर अना भी अपने मॉ से पूछती रहती थीःमॉ शनिवार कव आएगा!फिर स्टेफानी उसे वताने लग पड़ती थीःआज वुद्धवार है.तुम्हे वस तीन रातें और सोनी है।
एक वार मुझे उससे पूछना ही पड़ाःये अना शनिवार का इन्तजार इस कदर क्यों करती है!
ःशनिवार को इसके पापा इसे लिवाने आते है।फिर वो पूरे दिन उन्ही के संग रहती है।
इसके आगे मैने उससे कुछ नही पूछा।काश!स्टेफानी से मेरी मुलाकात तीन वर्ष पहले हुई होती!
कहने सुनाने को हमारे वीच वहुत कुछ था.जिसकी पहल मै नही करना चाहता था और स्टेफानी का ये हाल था कि विना पूछे वो कुछ वताती ही न थी।लिहाजा हमारा सम्वन्ध अभी भी औपचारिकताओं की सीमा के अन्दर था।अना के पास उसके पापा थे.एक अतिरिक्त पापा की उसे कोई लालसा न थी।
इसी औपचारिकता को तोड़ने के लिए एक वार मैने स्टेफानी को अपने घर खाने पर भी वुलाया।ये औपचारिकता तो न टूटी.पर थोड़ा वहुत मुझे उसके वैवाहिक जीवन और उसके अलगाव के वारे मे पता चला।उसके जाने के वाद कई दिनो तक इस शाम की कुछ वातें मेरा मन छूती रही।कुछ वातें ही नही.वल्कि पूरी शाम ही मेरे ऑखों के सामने एक चलचित्र की तरह तिरती रहीं।
पॉच वजे शाम को उसे मेरे पास आना था और ठीक पॉच वजे ही मेरी कौल वेल घरघराई।दरवाजा खोल कर मै फ्लोर पर आ गया।सीढियों पर हर एक कदम की आहट मुझे असहज करती चली जा रही थी।कुछ ही मिनटों के वाद स्टेफानी अपनी वेटी के साथ मेरे सामने थी।दोनो ने लम्वी स्कर्ट और पूरे वॉह की व्लाउजें पहन रखी थी।स्टेफानी के हॉथ मे एक रैप्ड वाईन की वोतल और अना के हॉथ मे रैप्ड एक जमनी लिलियन का फूल था।इन दोनो परियों को मै एक पल तक तकता ही रह गया।मौन अना ने ही तोड़ाःप्रमोद हमे अन्दर आने को नही कहोगे!
मेरी तन्द्रा टूटी।
अना अपने साथ अपने खिलौने भी लाई थी।फटाफट उन्हे ड्राईन्गरूम मे विछा कर उनसे खेलने लगी और स्टेफानी पूछ कर खाने की मेज सजाने मे लग गई।जव खाने की मेज सज गई तो वो ड्राईन्गरूम मे विखरे सामानो को समेटनी लगी।मै मना कर करके थक गया.पर उसने अपना काम जारी रखा।मै रसोई मे ही लगा रहा और इस वीच वो मेरे दूसरे कमरे भी देख आई।
खाने की मेज पर उसने मुझसे पूछाःइतने वड़े मकान मे अकेले तुम्हारा मन नही घूटता!
ःघूटता क्यों नही है.पर शुक्र करो कि होफ मे एक इन्डियन यास्मिन है।कुछ घन्टे उसको देखने निहारने मे वीत जाते हैं।
स्टेफानी का चेहरा रक्ताभ हो उठा।
खाते पीते आठ वज चले।अना घर चलने की जिद़ करने लगी.जिसका विरोध नही किया जा सकता था।उसके सोने का समय हो चला था.पर स्टेफानी विना कोई प्रतिक्रिया जताये उसे अपनी गोद मे ले ली और कुछ हल्की थापों के वाद अना सो चुकी थी।मै धीरे से उठ कर अपने सोने वाले कमरे का दरवाजा खोल आया और अपना विस्तर भी ठीक कर आया।
जव स्टेफानी अना को मेरे विस्तर पर सुला कर वापस ड्राईन्गरूम मे लौटी तो गोकि दूसरे सोफे खाली थे.पर वो आकर मेरे वगल मे वैठी।वैठने के वाद उसने अपना स्कर्ट नीचे तक खीच कर अपने दोनो पॉव ढॅक लिए।वो तो मुझे समान्य ही लगी पर उसके सानिध्य ने मुझे ठीक ठाक असहज

कर रखा था।मै नही चाहता था कि वो मेरी असहजता भॉपें.यही सोच कर मैने उससे कहाःतुम मेरे बारे मे प्रायः सब कुछ जान चुकी हो जिसके लिए तुम्हे मुझसे कुछ भी पूछना न पड़ा।मै खुद ही अपने बारे मे तुम्हे बताता चला गया।मुझे लगता है.जैसे तुम अपने बारे मे मुझसे सब कुछ छुपाना चाहती हो।छोटी सी छोटी बातों के लिए मुझे तुमसे पूछना पड़ता है।ऐसा कौन सा पत्थर है.जो तुम्हारे सीने पर पड़ा है!

ःपत्थर तो कोई नही।मेरा स्वभाव ही कुछ ऐसा है।फिर भी क्या जानना चाहते हो मेरे बारे मे!

ःसब कुछ।

ःजैसे!

ःदेखा तुमने।बिना सवाल के तुमसे कुछ बताया ही नही जाता।

ःमाक्स के बारे मे जानना चाहते हो!

माक्स उसके पति का नाम था.ये मै जान चुका था।ये विषय मेरे लिए थोड़ा क्लिष्ट तो था.पर बेमानी नही।मैने अपनी सहमति दे दी।

स्टेफानी को भी अपने अतीत की तरफ लौटने मे थोड़ा वक्त लगाः

स्कूल की पढाई खत्म करने के बाद मै अपने मॉ बाप पर अपने पढाई का बोझ नही डालना चाहती थी।मैने फार्मास्वायटिकल टेक्निकल असिसटेन्टिन का एक तीन वर्षीय डिप्लोमा ज्वाईन कर लिया।डिप्लोमा के आखिरी वर्ष मे मेरी जान पहचान माक्स से एक बैंक मे हुई.जिसका वो मैनेजर था।चन्द मुलाकातों के बाद ही मुझे शादी का प्रस्ताव मिला.जिसे मैने अपने मॉ बाप के विरोधों के बावजूद स्वीकार कर लिया।पता नही क्यों मेरे मॉ बाप को माक्स के एक करोड़पति परिवार से होने और मुझसे दस वर्ष बड़े होने से घबराहट थी।ये मेरे जीवन मे शादी का पहला प्रस्ताव था.जिसे कोई भी लड़की अपने मरते दम तक नही भूलती है।बड़ी धूमधाम से हमारी शादी हुई और उतनी ही धूम धाम से हमारी शादी की पार्टी भी।शादी के बाद हमें रहने को लिख्टेनराडे मे लॉन के साथ एक कोठी मिली.जिसे माक्स की मॉ ने सजाया।माक्स के मॉ बाप की कोठी हमारे करीब ही थी।उनका हमारे यहॉ अक्सर आना जाना होता था।शादी के चन्द दिनो बाद ही मुझे पता चल गया कि इस परिवार के सारे छोटे बड़े निर्णय माक्स की मॉ के हॉथों मे है और हमारा अपना कोई निजी परिवार नही है।उन्हे अपनी हर बात मे अपनी रईसी बखारनी होती थी.जो मुझे दिन व दिन आहत किये जा रहा था।वो मेरी नौकरी के खिलाफ भी थीं।दिन भर सज कर मुझे उनकी सहेलियों की तिमारदारी करनी होती थी।मेरे पहनने के कपड़े भी वही खरीदती थीं।किसी भी तरह का विरोध सम्भव न था.क्योंकि माक्स का सम्बल मेरे पास न था।यहॉ तक कि मेरे मॉ बाप और मेरी सहेलियों पर लिख्टेनराडे आने की मनाही थी।जब मेरा गर्भ ठहरा.तब माक्स अपने ही बैंक मे काम करने वाली किसी महिला के प्यार मे जा उलझा।पैसा ही जीवन मे सब कुछ नही होता प्रमोद।मैने जरूरत के सामान बॉधे और लिख्टेनराडे को अल्विदा कहा।अब मै तलाकशुदा और एक बच्ची की मॉ हूँ.कह कर उसने अपनी नज़रे मेरे चेहरे पर गाड़ दी.इस भाव से कि और क्या मुझे उसके बारे मे जानना है।

मुझे उससे एक और बात जाननी थी.पर मुझसे पूछा नही गयाःक्या वो माक्स को अलगाव के बावजूद भी प्यार करती है!

मुझे सबकुछ बेहद पेचीदा लगा।मेरी समझ मे नही आ रहा था कि मै इस सम्बन्ध को कहॉ तक बढाऊँ!मुझे अपना एप्रोच भी थोड़ा फास्ट लग रहा था।मै अना को भी किसी ऊहापोह मे नही डालना चाहता था।

इस मुलाकात के बाद मुझे अपनी भावनाओं को जरा समेटना पड़ गया।औधे मुँह गिरने का मुझे कोई विशेष शौक नही था।

एक दिन शाम को अप्रत्याशित मेरे दरवाजे की घंटी बजी।अना अपनी मॉ के साथ मुझे अपने जन्मदिन का न्यौता देने आई थी।इन्हे ड्राईन्गरूम मे बिठा कर मै जूस लाने कीचन मे गया।जब वापस ड्राईन्गरूम मे आया.तब अना अपनी मॉ से कुछ कहने की जिद़ कर रही थी.जिसे स्टेफानी टाले जा रही थी।पूछने पर बड़े अधिकार से अना कहने लगीःतुम्हे हमारा ड्राईन्गरूम भी सजाना है।

ःठीक है सजा दूँगा।कितने लोगों को बुलाया है!

एक सॉस मे वो न जाने कितने बच्चों के नाम गिनवा गई।

ःतुम्हारे पापा भी आएँगे!

ःहॉ!पर शाम को।मेरे दादा दादी.नाना नानी सभी आएँगें।

ःमै तुम्हारे लिए क्या लाऊँ!

ःप्लेमो की एक ट्रेन।ये मै मॉ से चाहती थी.पर उन्हे ये बड़ा मंहगा लगता है।

आने वाले बुद्धवार को मै उसे उसके ड्राईन्गरूम सजाने का वायदा कर दिया।उसी सप्ताह मे शुक्रवार को अना का जन्मदिन था।

शनिवार को ही मै श्लोसस्ट्रासे जाकर सजावट की सारी चीजें खरीद लाया।अना के लिए उसका कहा प्लेमो की बैटरियों से चलने वाली ट्रेन और एक गर्म जैकेट भी।जब बुद्धवार को सजावट की चीजें लेकर मै स्टेफानी के घर की तरफ बढा.तब एक अजीब सी अनुभूति मुझे घेरे हुए थी।पर्दे के पीछे खड़ी रहने वाली लड़की से मै मिलने को तो मिल चुका था.अब मै उसके अपार्टमेन्ट मे जा रहा था।दरवाजा स्टेफानी ने खोला।अना झटपट आकर मेरी गोद मे जा चढी।उसे गोद मे लिये मै स्टेफानी का एक एक कमरा देख आया।मेरी रसोई की दिशा मे उसका ड्राईन्गरूम और सोने वाला कमरा था।अना का कमरा स्पील प्लात्स की तरफ था।सारे फर्निचर्स हल्के कीफर के थे और वो भी सिर्फ जरूरत भर के।मुझे इस शाम इस अपार्टमेन्ट की दो चीजें बेहद खल रही थीःस्टेफानी का डबल बेड और ड्राईन्गरूम की एक तिपाई पर सजी उसके शादी की तसवीर।

शाम के आठ बजे तक मै स्टेफानी के संग इनका ड्राईन्गरूम और अना का कमरा सजाता रहा।मुझे न जाने कितने बैलून्स फूँकने पड़े।अना के खुशी की कोई सीमा ही न थी।न जाने कितनी बार मुझे उसके चुम्बनों के लिए झुकना पड़ा.और स्टेफानी से धन्यवाद सुनना पड़ा।पता नही कैसे स्टेफानी इस बात को भॉप ली कि मुझे इनके शादी की तसवीर परेशान कर रही है।ये तसवीर तिपाई से गायब थी।अब वहॉ मेरे लाये फूल एक सुन्दर से वाजे मे सजे पड़े थे।फिर भी तमाम आग्रहों के बाद भी शाम के खाने पर मै नही ठहरा।

दूसरे दिन काम के बाद मुझे इन्हे काईजर्स मे मिलना था।खरीदे सामान इतने ज्यादे हो गए थे कि मुझे अपने सायकल के पीछे एक ट्राली जोड़नी पड़ गई।जो कुछ भी मै इनके लिए कर रहा था दरअसल उसे माक्स को करना था।पता नही वो किस तरह का पिता था!

दूसरे दिन मुझे इनके यहॉ छ बजे शाम को पहुँचना था।तब तक अना के बुलाये सारे बच्चों को चले जाना था।जब मै तीन बजे के आसपास काम से वापस आया.तो देखा कि स्टेफानी के घर के सामने दसो बग्गियॉ खड़ी है।उसके घर मे होने वाली कोलाहलें तो मै अपनी कीचन से भी सुन सकता था।अपना थैला एक खूँटी पर टांग कर मैने एक कप चाय बनाई और फिर अना के प्रेजेन्टस रैप करने लगा।

मुझे जब से इस जन्मदिन का न्यौता मिला था.तब से ही मै ये निर्णय नही ले पा रहा था कि मै इस जन्मदिन पर जाऊँ या नही!न जाने क्यों मै

माक्स से मिलना नही चाह रहा था।सिर्फ एक बार मैने स्टेफानी और अना को अपनी उलझन बताई थी।अना तो मुँह फूलाकर बैठ गई.पर स्टेफानी कहने लगीःतुम्हारी जैसी मर्जी.पर तुम हमारे मेहमान हो.माक्स के नही।तुम्हे हमने बुलाया है।थोड़ी देर के लिए ही सही.पर आ जाना।अना का मन रख लेना।

ःठीक है।मै देखूँगा।

मै अना का मन नही दुखा सकता था।चार बजे मै अना के प्रेजेन्टस लिए उसके पास जा पहुँचा।दरवाजा एक दूसरे बच्चे की मॉ ने खोला।मै उन्हे नही जानता था।मै अपना नाम बताकर उन्हे अपना परिचय दे ही रहा था कि लपकती स्टेफानी आई और बजाय मुझसे हॉथ मिलाने के जोरों से मुझे भींच लिया।मेरा नाम सुनकर अना भी भागी आई।

उसे गोद मे उठा कर मैने उसे सालगिरह की शुभकामनायें दी और उसे उसका उपहार पकड़ाया।आनन फानन वो उन्हे खोल कर जमीन पर फैला दी और अपनी मॉ से पटरियॉ जोड़ने की जिद़ करने लगी।

स्टेफानी ने मेरा दूसरे बच्चों की मॉओ से एक अच्छे दोस्त के रूप मे परिचय करवाया।मुझे ऐसा लग रहा था कि जैसे सभी को सॉप सूँघ गया हो।खड़े ही खड़े एक पेस्ट्री खा कर मै घर वापस चला आया।

होफ का सोया जीवन धीरे धीरे वापस लौट रहा था।होफ मे गिरी बर्फ पिघल रही थी।तापमान प्लस मे आ चुका था।काम के बाद रोज ही स्टेफानी और अना से मेरी मुलाक़ात होती थी।मै सायकल रोक कर इन्हे हलो कह कर इनका हाल चाल पूछ लिया करता था।इनसे मेरी दूसरी मुलाकात शाम के सात बजे होती थी।अब अना भी अपने मॉ के पीछे खिड़की पर आकर खड़ी हो जाती थी।सप्ताह मे कम से कम एक बार ये दोनो मेरे यहॉ शाम के खाने पर भी आते थे।होफ की मुलाकातें औपचारिक ही होती थी लेकिन घर पर की मुलाकातें नही।मै और स्टेफानी एक दूसरे से काफी घूल मिल चले थे।एक दूसरे का हॉथ हॉथों मे ले लेना.एक दूसरे के कन्धे पर हॉथ रख लेना.एक दूसरे से गले लग कर मिलना.एक दूसरे को मुक्का दिखाना या हल्की फुल्की चपतों तक हमारा सम्बन्ध जा चुका था।बाकी दीवारें हमारे बीच अभी भी पूर्ववत थी जिन्हे तोड़ने के संकेत न तो मुझे उससे मिले थे और न मैने ही उसे दिया था।

उसके जाने के बाद उसके मीठे परफ्यूम की ख़ुशबू घन्टों मेरे दिमाग मे छाई रहती थी।उसके एक दूसरे पर चढे बगूले के पंख जैसे सफेद दॉत पता नही क्यों मुझे बेहद भाते थे!

अब माक्स शनिवार को आ कर अना को अपने संग लिवा जाने के बजाय अब रविवार को भी स्टेफानी के यहॉ आने लगा था।एक बार स्टेफानी ने ही मुझे बताया था कि माक्स की दूसरी प्रेमिका भी उसके मॉ की दखलअन्दाजी न झेल पाई।उसने भी माक्स को अल्विदा कह दिया।अब उसके पास कुछ ज्यादे ही समय था।दिन भर वो होफ मे अना के संग खेला करता था।दोपहर का खाना भी ये इकट्ठे खाते थे।स्टेफानी अपनी बालकोनी मे बैठी माक्स का अना के संग खेलना देखती रहती थी।शाम के यही पॉच छ बजे वो वापस लौट जाता था।फिर मेरी गई सॉसे वापस लौटती थीं।

इन चक्करों को रोकना मेरे वश का न था और न ही मै स्टेफानी को माक्स से न मिलने के लिए विवश कर सकता था।बस एक बात का मुझे डर लगा रहता था कि स्टेफानी के इर्द गिर्द एक भेंड़िया मॅडरा रहा है।एक पल को भी अगर वो कमजोर हुई नही कि वो उसे दबोचा नही।मेरी समझ मे ही न आ रहा था कि मै किस तरह उसे इस खतरे से आगाह करूँ!

मै शनिवार और रविवार को सुबह से ही भगवान से सिर्फ एक ही मिन्नत करने लग पड़ता था कि वो पर्दो के खींचे जाने के बाद स्टेफानी के बगल मे अना को दिखाए.माक्स को कतई नहीं।मेरा भगवान अभीं भी मेरी सुने जा रहा था।

शब्दों मे मैने स्टेफानी पर अपना प्यार जाहिर नही किया था।मै इसकी जरूरत भी महसूस नही करता था.पर मेरे व्यवहारों मे उसने मेरा प्यार कब का भॉप लिया होगा!ये मेरा मन कहता था।

कुछ दिनो से एक सपना भी मुझे बेहद डरा रखा थाःठीक मेरे सामने एक तिपाई पर एक बहुत ही खूबसूरत फूलदान ताजे गुलाब के फूलों से भरा मेरा सारा ध्यान अपनी ओर समेटे खड़ा था।कमरे की खिड़कियॉ खुली हुई थीं।रह रह कर हवा के झोंकों से वो फूलदान लड़खड़ा पड़ता था।एक झोंका वो न झेल पाया और तिपाई से गिरकर टूट गया।मै उठ कर उसे कब का किसी सुरक्षित कोने मे रख सकता था.पर पता नही क्यों मै नही उठा।कई दिनो तक इस सपने ने मुझे व्यस्त रखा।जिस फूलदान का टूट जाना मेरे लिए बेमानी न था.उसे मैने टूटने से क्यों नही बचाया!क्या अहम था मेरे लिए!फूलदान की ख़ूबसूरती या फिर उसका टूटना!

पिछले सप्ताह होफ मे काफी चहल पहल रही।वहॉ के तीन क्रस्तानियन के बड़े बड़े पेंड़ काटे गए थे जिन पर बिजलियों की गाज आ पड़ी थी।हम सभी को होफ मे जाने की मनाही थी।रविवार दिन भर स्टेफानी माक्स के संग अपनी बालकोनी मे बैठी होफ मे होने वाली गतिविधियॉ देखती रही।ये दोनो अक्सर न जाने किन बातों मे खो जाते थे!रह रह कर माक्स अपना दाहिना हॉथ स्टेफानी के कन्धे पर रख देता था.जिसे परे कर देने की वो कोई जरूरत ही नही समझती थी।

पिछले बुद्धवार को जब वो मेरे पास आई थी.माक्स का भी प्रसंग आया था।अप्रत्यक्ष मैने उससे कहा भी था कि मुझे उसका माक्स से मिलना अच्छा नही लगता।उसने अना को बीच मे ले लियाःमै अना को उसके पिता से अलग नही कर सकती।ये उसके लिए एक सजा होगी।

फिर इसके आगे मैने उससे एक शब्द भी नही कहा।मन ही मन बस यही सोचता रहा कि आखिर हम एक दूसरे के इर्द गिर्द ढूँढ क्या रहे हैं!

अना को अपनी तीसरी सालगिरह पर माक्स से सपोर्टिंन्ग व्हिल्स के साथ एक सायकल मिली थी।अब उसकी सपोर्टिंन्ग व्हिल्स खोली जा चुकी थी।कई सप्ताहों से माक्स उसे सायकल चलाना सीखा रहा था।न जाने कितनी बार वो गिरी और अपने घुटने फुड़वाई।सीधे रास्तों पर वो सायकल चला लेती थी.बस मोड़ों पर वो गिर पड़ती थी।अना सारी दुनिया भूला कर माक्स से सायकल चलाना सिखती रहती थी और स्टेफानी अपनी बालकोनी मे बैठी अना का सायकल चलाना।जब तब वो माक्स से अपनी नजरें बचा कर मेरी तरह अपना दाहिना हॉथ लहरा दिया करती थी।

अना का माक्स के प्रति मोह मेरे और स्टेफानी के बीच की एक ऐसी खाई थी जिसे पाटा नही जा सकता था।वो मुझे भी बेहद मानती थी.पर उसे मेरी याद माक्स के जाने के बाद ही आती थी।मै कई बार सोचा भी कि इस प्रसंग को बन्द ही कर दूँ।ये एक त्रिकोणीय सम्बन्ध था.जो न तो मुझे मान्य था और न सहय ही।माक्स एक साये की तरह हमारे जीवन से लगा रहेगा।स्टेफानी का संपूर्ण समर्पण मुझे कभीं न मिल पाएगा।लेकिन मेरे मन को एक सन्निपात मारे हुए था।उसे समझाना इतना सरल नही था।

बुद्धवार शाम का खाना हम साथ ही खाते थे.लेकिन मेरी खिन्नता दिन व दिन बढती जा रही थी।दीन दुनिया की वातों मे मेरी कोई विशेष रूचि न रह गईथी।घूमा फिरा कर हमारे बीच अना ही एक विषय होती थी जिससे माक्स का नाम जुड़ा रहता था।धीरे धीरे ये बुद्धवार मेरे लिए एक आम और उवाऊ बुद्धवार होता जा रहा था।पहले जैसी अधीरता मेरे पास नही रह गई थी।जव तव स्टेफानी पूछती भी थीःक्या बात है प्रमोद!कहॉ रह रह कर खो जाते हो!

मै उसे कुछ भी नही बता पाता था।मै खिन्न सिर्फ एक ही बात पर रहता थाःअपनी अपेक्षाओं के चलते न जाने कितने दिल मेरे हॉथों टूटे!वो मुझे वेहद प्रिय थे!स्टेफानी के लिए उन्हे मैने अपने पास फटकने तक नही दिया।अव स्टेफानी की वारी थी।अव सारे कदम उसे ही लेने थे और वो अपने अतीत से चिपकी वैठी थी।वॅटा तन मै रो धोकर स्वीकार कर सकता था.पर वॅटा मन किसी भी शर्त्त पर नही।इतनी ही मुझे अपनी अपेक्षाओं से सहमति मिली थी।

अन्त मे मुझे कुछ भी नही मिलाःन तो स्टेफानी का वॅटा तन और न ही उसका वॅटा मन।

ऐसा ही एक मनहूस रविवार का दिन थाः

होफ मे माक्स अना के साथ रिंग खेल रहा था।स्टेफानी अपनी वालकोनी मे वैठी उनका रिंग खेलना देख रही थी।माक्स जान बूझ कर अना का फेंका रिंग पकड़ने के वजाय या तो गिरने देता था या फिर खुद ही लुढक पड़ता था।अना खिलखिला पड़ती थी।मै पहली बार स्टेफानी का भी खिलखिलाना देख रहा था।सफेद मोतियों की तरह वगवग करते उसके दॉत मुझे दूर से भी साफ साफ नज़र आ रहे थे।

अचानक अना का फेंका रिंग पास के ही एक पेंड़ की एक डाल मे जा फॅसा।समीप ही एक टहनी पड़ी थी जिसका एक हिस्सा तोड़ कर माक्स रिंग पर फेकने लगा।रिंग तो न गिरा.वल्कि माक्स की फेकी लकड़ी भी एक डाल से जा फॅसी।

तभी मुझे स्टेफानी अपने मकान के वगल से होफ मे आते दिखी।उसके दाहिने हॉथ मे एक रूल और वॉये हॉथ मे एक जोड़ी पहनी सैन्डलें थी।पहली वार इतने ध्यान से मैने उसकी देहयष्टि देखी जिसके सुन्दर होने के वारे मे मेरे मन मे कभीं कोई संशय न था।

अपनी सैन्डिले जमीन पर रख कर स्टेफानी अपनी रूल रिंग पर फेंके जा रही थी।दूर गिरे रूल को कभीं माक्स तो कभीं अना वापस लाकर उसे पकड़ा देते थे।ये एक पारिवारिक चिज था.जो मुझे उदासियों के धुंध मे धकेले जा रहा था।

अचानक रिंग गिरा और स्टेफानी पास खड़े माक्स के गले मे झूल गई।माक्स मिनटों उसे अपने से चिपकाये रखा।इसके पहले कि स्टेफानी की नजर मुझ पर पड़ती.मै खिड़की से परे हट गया।ईर्ष्या से मेरा पूरा वदन जल रहा था।

इसके वाद मुझे अपनी रसोई की खिड़की पर दुवारा जाना ही न था.फिर भी मै गया।रात के दस वजने को आये थे ः

स्टेफानी के सोने वाले कमरे की जालोजियॉ नीचे तक गिरी थी।उसके ड्राईन्गरूम के पर्दे खीचे जा चुके थे और वो अभीं भी वैठी माक्स से गप्पें लगा रही थी।अचानक वो उठी और अपने सोने के कमरे की ओर वढी।उसके पीछे आनन फानन माक्स भी अपनी टाई की गॉठ ढीली करता वढा।

ड्राईन्गरूम की वत्ती वुझाई जा चुकी थी.पर सोने वाले कमरे मे कोई एक हल्की सी वत्ती जल रही थी जिसका झीना सा प्रकाश जालोजियों से छन कर इन्डियन यास्मिन के झाड़ पर पड़ रहा था।मुझे अनायास इसके सारे फूल अपनी डालों पर मुरझाये से दिखे।मै नही समझता कि सोने वाले कमरे मे स्टेफानी वैठी माक्स को अपनी जमा की गई स्टैंपे और टेलीफोन कार्डस दिखा रही होगी।एकवारगी मेरे लिए सब कुछ वेमानी सा हो गया।मन ही मन मैने अपने मन से कहाःवहुत हो चुका।वन्द करो अपने इस नाटक को।मैने स्टेफानी के मकान की ओर खुलने वाली अपनी चारों खिड़कियों के पर्दे ही नही.वल्कि उनकी जालोजियॉ भी नीचे तक गिरा दीं।अव ये दिशा मेरे लिए महत्त्वहीन हो गई थी।

मै नफरत से भी नीचे मन की उस अवस्था मे जा चुका था.जिसे मै सिर्फ वेमानीपन की अवस्था का ही नाम दे सकता हूँ।अव मुझे न स्टेफानी मे कोई रूचि थी और न अना मे ही।अपनी तर्जनी उठा कर मैने अपनी भावनाओं को साफ साफ मना कर दिया था कि अव मै अपने मन पर उनकी थाप विल्कुल नही सुनना चाहता हूँ।

मेरी जालोजियॉ नीचे गिरी रहीं।काम पर आने जाने के लिए भी मैने दूसरा रास्ता लेना शुरू कर दिया।अव मेरे टेलीफोन रिप्लायर पर ज्यादे आवाजें स्टेफानी या अना की ही होती थीं।रोज ही मेरे लेटर वॉक्स मे स्टेफानी के हॉथ का लिखा कोई न कोई मैसेज होता था।रोजाना शाम को एक वार मेरी कौल वेल वजती ही वजती थी।मै घर पर ही होता था.पर उठ कर कभीं दरवाजा नही खोलता था।कभीं कभीं ये गेरानियनस्ट्रासे के मोड़ पर भी मेरा इन्तजार करते दिखते थे।मै झट से कोई दूसरा रास्ता ले लेता था।घर के दरवाजे पर रोज ही अना का साधिकार एक ऊॅची आवाज मे कहनाःप्रमोद! दरवाजा खोलो.तुम घर पर ही हो.ये हमे पता है.मेरे कानो मे एक पिघले शीशे की तरह रिसता था।मुझे स्टेफानी के सन्दर्भ मे वस एक वात समझ मे नही आती थी कि इस वेशर्म लड़की को आखिर मुझसे कहना क्या है!ये मुझसे क्या पूछना चाहती है!क्या जानना चाहती है!वो मुझे किन वातों की यंत्रणा दिये जा रही है!

स्टेफानी के हर प्रयासों के प्रति मै उदासीन वना रहा.पर अना का मै क्या करता!मेरे दरवाजा न खोलने पर वो रोज ही अपने मॉ से पूछती थीःमॉ!प्रमोद हमसे क्यों नाराज है!पापा भी अव हमारे पास नही आते.ये मुझे अन्दर तक उद्वेलित और उदास कर जाता था।

एक दिन शाम को मै स्टेफानी के नाम एक पत्र लिखने वैठा।न जाने कितने पत्र उसके नाम लिखा और फाड़ा।न चाहते हुए भी रह रह कर मेरा पत्र कड़वाहटों से भर जाता था।इस विदाई के पत्र को मै इतना कड़वा नही लिख सकता था.पर इस पत्र मे मै अपने पीछे किसी भी तरह की आशा या आश्वासन भी नही छोड़ना चाहता था।

खैर किसी प्रकार ये पत्र मैने पूरा कियाः

प्रिय स्टेफानी!

हमारे वीच अव कहने सुनने को कुछ भी नही वचा है।मै नही समझता कि तुम्हे इस वात का पता नही चला होगा कि मै तुमसे प्यार करता हूँ.फिर भी तुमने मेरा दिल दुखाया।सिर्फ तुम्हारे लिए मैने अपनी अपेक्षाओं को अपने पास भटकने तक न दिया.जिन्हे तुम भी जानती हो।तुम्हे मै किस तरह का भविष्य देता.ये मै नही जानता।मै सिर्फ एक वात ही जानता हूँ कि मै कभीं तुम्हारी या अना की भावनाओं से नही खेलता।तुम दोनो का दिल कभीं नही दुखाता।अपने जीवन मे कोहरे हम खुद ही वुलाते हैं जिन्हे सूर्य की किरणें ही छॅटा पाती है।इन किरणों को भी हमे खुद ही वुलाना पड़ता है।ये खुद नही चिटकतीं हैं।

मै कल पूरे साल की छुट्टी लेकर हार्ल्स जा रहा हूँ।तुम अपने सारे प्रयास समेट लो।मै तुमसे कोई सम्पर्क नही चाहता।अगर तुममे थोड़ा भी

आत्मसम्मान है. तो मेरे आड़े कभीं न आना। अपने ईश्वर से मै तुम्हारे और अना के लिए एक सुन्दर और स्थाई भविष्य की कामना सदैव करता रहूँगा।
इस पत्र को स्टेफानी के लेटरबॉक्स मे डाल कर मै छ सप्ताह के लिए हार्ल्स चला गया।
स्टेफानी को भूल जाना मेरे लिए उतना आसान नही था. जितना मैने समझ रखा था। हार्ल्स मे मै दिन भर वहाँ के जंगलो मे भटकता रहता था. फिर भी सुबह तक मेरी नींद मेरी ऑखों से ऑख मिचौली खेलती रहती थी। मेरा मन कभीं मोम की तरह पिघलने को होता था तो कभीं चट्टान की तरह कड़ा हो जाता था। स्टेफानी की याद मुझे मोम की तरह पिघलाती थी और मेरा अपना अहंकार मुझे चट्टान की तरह कड़ा कर देता था।
क्या कुछ नही था उसके पास!एक अप्रतिम मन. एक अनिन्दनीय सौन्दर्य। उसके सानिध्य. उसके स्पर्श. उसके चेहरे के एक एक भाव मे जो लावर्णय बसा था. उसे मै कालीदास की तरह शब्दों मे शायद कभीं नहीं बॉध पाऊँगा। जहॉ तक मेरे अहंकार की बात है. दो शब्दों मे उसकी यही व्याख्या हैःमुझसे किसी का इतिहास तक नही पचाया जाता था. वर्त्तमान की तो बात ही दूर की रही। अपनी ऑखों से देखे किसी भद्देपन मे दुबारा सौन्दर्य ढूंढने या पाने का लोभ मुझे कभीं से न था।
जब मै अपनी छुट्टियॉ बिता कर वापस बर्लिन आया. स्टेफानी अपना मकान बदल चुकी थी। न जाने कितने महीनों के बाद मैने अपनी जालोजियॉ ऊपर कीं। एक बार मेरा जी धक्क करके रह गया। अगस्त मे ही इन्डियन यास्मिन के सारे फूल मुरझा चुके थे। पूरा का पूरा झाड़ ही मुझे बीमार दिख रहा था। स्टेफानी के मकान की सारी जालोजियॉ नीचे तक गिरी हुई थीं। इसके पहले कि उसकी यादों की बारात मेरे मन के प्रांगण मे आतीं .मैने अपनी जालेजियॉ फिर से नीचे तक गिरा दीं।
कुछ वर्षो के अन्तराल के बाद एक दिन मै काम से वापस घर आ रहा था कि अचानक एक क्रासिंग पर एक बच्चे की आवाज पर मुझे अपनी सायकल रोकनी पड़ी। उसके मुँह से कहा मेरा अपना नाम मुझे अन्तरतम तक जैसे चीर सा गया।
ये अना थी. जो वेलेन्सिया कैफे के लॉन मे अकेली एक खाली मेज के सामने बैठी हुई थी। मुझसे आगे न बढा गया। पास ही बने एक सायकल स्टैंड पर अपनी सायकल टिका कर मै उसकी ओर बढाःतुम यहॉ अकेली क्यों बैठी हो!तुम्हारी मॉ कहॉ है!
बिना किसी बात का जवाब दिए वो मेरी बॉहों मे झूल गई। मेरी ऑखें डबडबाने को आईं। किसी तरह अपनी आवाज को संयत रख कर दुबारा मैने अपना पहला सवाल दुहराया।
ःवो पैसे भूल आई थी। पैसे लेने घर गई हैं। आईसक्रीम खिलाने का वायदा किया था. पर साथ मे पैसे न थे।
ःतुमलोग यहीं कहीं पास मे ही रहते हो!
ःहॉ. उस सामने वाले विडियो लाडेन के सामने।
ःआओ मै तुम्हे आईसक्रीम खरीद देता हूँ। कितने कूगल्स तुम्हे लेने हैं!
ःमॉ तो हमेशा सिर्फ एक ही खरीदती है। तुम मेरे लिए दो खरीद सकोगे!
ःआओ मेरे संग। तुम्हे जितने भी कूगल्स लेने हैं. काऊन्टर पर बताना. ये कहके मै अना के साथ काऊन्टर पर जाने ही वाला था कि मुझे तेज कदमों से आते स्टेफानी दिखी।
मुझे अपनी ऑखों पर एकबारगी विश्वास ही न हो पाया। क्या हो गया है इसे!कहॉ खो दी है इसने अपनी सुन्दरता!
भरा पूरा बदन. मोटे फूले गाल. हॉथियों जैसी जांघें. बेतरतीब कटे लाल रंग के बाल. गाढे लाल लिपस्टिक से रंगे ओंठ। उसने एक नीले रंग की जीन्स और एक लाल रंग का पूलओवर पहन रखा था। गले मे एक काले रंग का स्कार्फ बॅधा था। उससे ढंग से चला तक न जा रहा था। रह रह कर उसके कन्धे फूटपाथ के दॉई तरफ की दीवार से जा लगते थे।
सम्बन्धों का एक अन्त है. पर भावनायें कहॉ मर पाती है। जहॉ प्यार है वहॉ क्षमा भी है। सहानुभूतियों से मेरा मन भर आया। मै सब कुछ भूला कर उसे गले से लगा लिया।
ःअना के लिए आईसक्रीम खरीदने जा रहा था। तुम्हारे लिए भी कुछ लाऊँ।
ःऊँ ऊँ।
ःकुछ पीने के लिए ले आऊँ!
ःऊँ ऊँ। तुम्हे कुछ पीना है तो बताओ. मै ले आती हूँ।
उसे अनसुना करके इन दोनो को लॉन के एक कोने की मेज की तरफ भेज कर मै अना के लिए जितने भी कूगल्स एक ग्लास मे समा सकते थे डलवा कर अपने और स्टेफानी के लिए एक ग्लास ठंढा मिनरल वाटर लिए मेज की तरफ बढा।
बातचीत नए मकान से शुरू हुई जो थोड़ा बड़ा और थोड़ा सस्ता था। स्टेफानी के पास एक चार घन्टे का काम भी था। अना को भी एक कैथलिक स्कूल मे एडमिशन मिला हुआ था। माक्स का कोई प्रसंग नही आया और न मैने उसका जिक्र ही किया।
इस मुलाकात मे मुझे एक बेहद ही दुखद बात का भी पता चला। पिछले एक वर्ष से स्टेफानी एक मनोवैज्ञानिक बीमारी से जा उलझी थी। उसे अपने मे एक साथ कई व्यक्तित्वों के होने का भान होता है। ।इसे मै व्यक्तिगत तौर पर एक बीमारी का नाम नही दे सकता. पर जर्मनी मे इसे एक बीमारी का एक नाम भी है. जिसके इलाज मे लोगों को न जाने कौन कौन से ड्रग्स लेने पड़ते हैं. कार्टिजोन की गोलियॉ निगलनी पड़ती है!परिणाम स्वरूप बदन फूलने लगता है।
जब इन सारे व्यक्तित्वों मे स्टेफानी अपने आप को नही ढूंढ पाती है. तो कैंची लेकर अपने बाल उटपटांग ढंग से काटने लग पड़ती है। अना के लिए वो बिल्कुल पराई हो जाती है। अना उससे कैंची तो नही छिन पाती है. पर फोन करके अपने नाना नानी को बुलवा लेती है। जब फोन पर उसे नाना नानी नही मिलते थे. तब वो दरवाजा खोल कर किसी पड़ोसी को लिवा लाती है। मिनटो मे एम्बूलेन्स की गाड़ी से उसे इलाके के सबसे समीप अस्पताल मे भर्ती करवा दिया जाता है।
मै चुपचाप बैठा स्टेफानी को सुनता रहा। अना अपने आईसक्रीम मे व्यस्त रही।
बड़े भरे मन से मैने उससे और अना से विदा लिया।
अगर जर्मनी मे दोस्त ओर प्रेमी दो शब्द होते तो मै अपनी दोस्ती उससे कभीं नही खींचता। फिर भी मेरा मन कई महीने तक स्टेफानी के लिए अपने उत्सर्ग और उससे अलगाव के बीच झूलता रहा।

इनकी व्यवस्था मे आने और जीने के लिए मै अपने व्यक्तित्व का एक बहुत बड़ा अंश समय के साथ खो चुका था और जो शेष बचा था. उसे मै खोना नही चाहता था। न चाहते हुए भी मुझे स्टेफानी के अध्याय को जर्बदस्ती बन्द करना पड़ा।
मुझे मेरी व्यस्तताओं ने घेर लिया। मुझे ये पता नही था कि ये इन्डियन यास्मिन स्टेफानी के ब्लॉक मे रहने वाली एक विधवा औरत फ्राऊ फ्लूग की सम्पत्ति है जिसके बीज वो इन्डिया जा कर लाई थी। वही उसका देख भाल भी करती थी। स्टेफानी और अना से मेरी वैलेन्सिया मे हुई मुलाक़ात के चन्द दिनो बाद ही एक दिन न जाने क्यों ये औरत इस झाड़ को उखाड़ फेंकी और इस घेरे मे आस्टर्न के पौधे लगा दी। मै ही नही बल्कि पूरा होफ उसके इस निर्णय से हतप्र्भ था।
मैने फिर से इस दिशा मे खुलने वाली सारी खिड़कियों की जालोजियाँ नीचे गिरा दीं। होफ मे सुन्दरता के नाम पर अब मेरी समझ से कुछ भी नही बचा थाः...

प्र्मोद कुमार सिंह